॥ ओ३म् ॥
॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को जन–जन तक
पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष २३ अंक १ - जनवरी, फरवरी २०२३

वेदोद्धारक
महर्षि दयानन्द

म.दयानन्द का वेदमार्ग विश्वशान्ति व सुख को दर्शाता है-प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी

महर्षि दयानन्द की २००वी जयंती शुभारम्भ अवसर पर यज्ञ करते हुए प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदीजी। साथ में है गुजरात के राज्यपाल डॉ.श्री देवव्रतजी आचार्य ।

मुख्य समारोह में मंच पर आगमन होते ही प्रधानमन्त्री जी का आर्यों को अभिवादन।

नयी पिढी को दिव्य ज्ञानज्योति सौंपते हुए प्रधानमन्त्री श्री मोदीजी।

म.दयानन्द द्विशताब्दी उद्घाटन समारोह में संयोजक श्री विनयजी आर्य के साथ महाराष्ट्र सभा के मन्त्री श्री दिवे, कोषाध्यक्ष राठौर, नयनकुमार आचार्य तथा व्यंकटेश हालिंगे।

गुजरात के राज्यपाल डॉ.देवव्रतजी आचार्य के साथ श्री दिवे, श्री राठौर, श्री आचार्य।

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ नेता श्री प्रकाशजी आर्य के जन्मदिवस पर उनका स्वागत करते हुए महाराष्ट्र सभा के पदाधिकारी।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,१२३ कलि संवत् ५१२३ विक्रम संवत् २०७९

दयानन्दाब्द १९८ पौष/माघ जनवरी, फरवरी २०२३

प्रधान सम्पादक	मार्गदर्शक सम्पादक	सम्पादक
राजेन्द्र दिवे	**डॉ.ब्रह्ममुनि**	**डॉ.नयनकुमार आचार्य**
(९८२२३६५२७२)		(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक **प्रा.ओमप्रकाश होलीकर, ज्ञानकुमार आर्य, राजवीर शास्त्री, डॉ.अरुण चव्हाण**

लेख/समाचार भेजने हेतु – ई–मेल : nayankumaracharya222@gmail.com

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) श्रुतिसुगन्ध ०४
२) बना रहे उत्साह हमारा..! (सम्पादकीयम्)............ ०४
३) प्रधानमन्त्री श्री मोदीजी का ऐतिहासिक भाषण...... ०६
४) विलक्षण युगपुरुष की द्विजन्मशताब्दी............ १४
५) समाचार दर्पण १८

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी १९
२) आर्य समाज कसा वाढेल? २०
३) हुतात्मा वेदप्रकाश आर्य २४
४) वसंत ऋतुतील आजार व उपाय २६
५) वार्ताविशेष २८
६) शोकवार्ता ३०

*** प्रकाशक ***

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय–आर्य समाज,
परली–वैजनाथ–४३१५१५

*** मुद्रक ***

वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परली–वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क

वार्षिक रू.१००/-

आजीवन रू.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवादकी परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली–वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

श्रुतिसुगन्ध

अग्निदूत को सामने रखे!

अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे।
देवाँ आ सादयादिह।। (ऋग्वेद ८/४४/३)

पदार्थान्वय– जैसे ईश्वर हम लोगों का सखा, बन्धु, भ्राता, पिता, माता और जनयिता कहलाता है, वैसे ही वह दूत भी है, वह आत्मा को सन्देश देता है। अथवा दूत के समान हितकारी है अथवा दूत शब्द का अर्थ निखिल दुःखहारी भी होता है। मैं उपासक(**दूतम्**) दूत (**अग्निम्**) और सर्वाधार ईश को (**पुरो दधे**) आगे रखता हूँ अर्थात् मन में स्थापित करता हूँ और स्थापित करके (**हव्यवाहम्**) उस स्तोत्ररुप हव्यग्राहक परमात्मा की (**उपब्रुवे**) स्तुति करता हूँ, वह आप (**इह**) उस ध्यान योग में (**देवान्**) सर्व इन्द्रियों को (**आ**) अच्छे प्रकार(**सादयात्**) प्रसन्न करें अर्थात् स्थिर करें।

भावार्थ – ध्यान योग के समय मन में ईश्वर को स्थापित कर इन्द्रियों को वश में लाकर स्तुति प्रार्थना करें।

सम्पादकीयम्...

बना रहे उत्साह हमारा..!

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द के २००वी जन्मजयन्ती वर्ष की शुरुआत बड़े ही उत्साह के साथ हो चुकी है। देश के कर्मकुशल एवं लोकप्रिय प्रधानमन्त्री श्री नरेंद्र मोदीजी के शुभ करकमलों से इस ऐतिहासिक समारोह का उद्घाटन अभी दि.१२ फरवरी को राजधानी दिल्ली में संपन्न हुआ। इन्दिरा गांधी स्टेडियम में खचाखच भरे आर्यों के जनसैलाब के सम्मुख तथा टीवी व मोबाइल लाइव प्रसारण से जुड़े देश-विदेश के लाखों आर्यों के सामने प्रधानमंत्रीजी ने अपना अध्ययनपूर्ण ओजस्वी संबोधन दिया । श्री मोदी जी ने अपने संपूर्ण भाषणद्वारा यह सिद्ध कर दिखाया है कि महर्षि दयानंद के प्रति उनके ह्रदय में कितना स्नेहमय लगाव व आदर है। समारोह स्थल के परिसर में उनके शुभागमन से लेकर प्रस्थान समय तक का उनका प्रत्येक क्रियाकलाप दयानन्द एवं आर्य समाज के विचारों को सम्पुष्ट करनेवाला रहा । मंच की ओर आते समय उन्होंने आर्य समाज के कार्यों

व गतिविधियों से संबंधित लगे ऐतिहासिक दस्तावेजों ,चित्रावलियों व गुरुकुल आदि उपक्रमों को ध्यानपूर्वक देखा । इतना ही नहीं बल्कि श्रद्धा के साथ उन्होंने यज्ञ भी किया। इन सभी से प्रभावित हुए श्री मोदी जी जब मुख्य मंच पर पधारते हैं तो नए जोश एवं उत्साह के साथ ! उपस्थित आर्यजनों की तालियों से गुंजायमान वातावरण में उनका सभी दर्शकों को हाथ हिलाकर अभिवादन व अभिनंदन करनेवाला दृश्य मानों महर्षि दयानन्द की विचारप्रणाली को राजाश्रय मिलने का शुभ संकेत हो ! यह प्रसन्नतापूर्वक इसीलिए कहना संभव है कि पूरे दो वर्षों के कार्यक्रम भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के तत्वाधान में आयोजित हो रहे हैं, जिनकी अध्यक्षता स्वयं प्रधानमंत्री जी कर है। विशेष हर्ष व संतोष की बात यह कि श्री मोदी जी के संपूर्ण भाषण का केंद्रबिंदु महर्षि दयानंद एवं आर्य समाज ही रहा। पूरे वक्तव्य में उन्होंने कहीं भी वैदिक विचारों के प्रतिकूल बात नहीं की। उनके संबोधन में अनोखी प्रगल्भता, चिंतनशीलता, गंभीरता एवं सैद्धांतिक निष्ठा दृष्टिगोचर होती रही। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महर्षि के विचारों की प्रासंगिकता को उन्होंने प्रबलतापूर्वक अंकित किया है। आर्य समाज के क्रांतिकारी इतिहास को वे याद करते हैं। साथ ही आर्य समाज एवं आर्य संस्थाओं द्वारा चलाए जा रहे सामाजिक एवं परोपकारी कार्यों का भी वे कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करते हैं ।

स्वतंत्रता के बाद ऐसा पहली बार देखने मिला है कि कोई प्रधानमंत्री इतनी विनम्रता व सहृदयता से महर्षि दयानंद के विचारों व कार्यों के प्रति समर्पित होकर अपने मन्तव्य रखते हो! श्री मोदी जी के संबोधन ने आर्यजनों में एक नई ऊर्जा उत्पन्न की है। उनके विचारों को सुनकर हर एक आर्य कार्यकर्ता गद्‌गद हो उठा है। हर एक के हृदय में कुछ कर गुजरने की इच्छाशक्ति जाग उठी है। कहीं ऐसा न हो कि यह उत्साह कुछ दिनों तक ही रहे? अतः महर्षि के सपनों को साकार करना हम भूलें!

हमारा कर्तव्य है कि इस नवसंचारित उत्साह को बनाए रखें । आनेवाले दो वर्षों में महर्षि दयानंद व आर्य समाज की विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने में हम कैसे सफल हो सकते हैं? इसपर विचार करें। इन्हें विशाल रूप से क्रियारूपता प्रदान करने में हमारी सारी शक्ति लगनी चाहिए। तभी महर्षि की २००वी जन्मशताब्दी का उद्घाटन समारोह एवं प्रधानमन्त्री जी का वह प्रेरक उद्बोधन हमारे लिए प्रेरकशक्ति के रूप में नित्य नई ऊर्जा देता रहेगा।

– नयनकुमार आचार्य

नई दिल्ली में आयोजित म.दयानन्द द्विशताब्दी वर्ष उद्घाटन समारोह में

प्रधानमन्त्री मा.श्री नरेन्द्र मोदीजी द्वारा दिया गया ऐतिहासिक भाषण

कार्यक्रम में उपस्थित गुजरात के राज्यपाल श्रीमान आचार्य देवव्रत जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री सुरेश चंद्र आर्य जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री विनय आर्य जी, मंत्रिमंडल के मेरे साथी जी. किशन रेड्डी जी, मीनाक्षी लेखी जी, अर्जुन राम मेघवाल जी, सभी प्रतिनिधिगण, उपस्थित भाइयों और बहनों!

महर्षि दयानन्द जी की २००वीं जन्मजयंती का ये अवसर ऐतिहासिक है और भविष्य के इतिहास को निर्मित करने का अवसर भी है। ये पूरे विश्व के लिए मानवता के भविष्य के लिए प्रेरणा का पल है। स्वामी दयानन्द जी और उनका आदर्श था- 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।' अर्थात् हम पूरे विश्व को श्रेष्ठ बनाएँ! हम पूरे विश्व में श्रेष्ठ विचारों का, मानवीय आदर्शों का संचार करें! इसलिए २१वीं सदी में आज जब विश्व अनेक विवादों में फंसा है, हिंसा और अस्थिरता में घिरा हुआ है, तब महर्षि दयानंद सरस्वती जी का दिखाया मार्ग करोड़ों लोगों में आशा का संचार करता है। ऐसे महत्त्वपूर्ण दौर में आर्य समाज की तरफ से महर्षि दयानंद जी की २००वीं जन्मजयंती का ये पावन कार्यक्रम दो साल चलने वाला है और मुझे खुशी है कि भारत सरकार ने भी इस महोत्सव को मनाने का निर्णय किया है। मानवता के कल्याण के लिए ये जो अविरल साधना चली है, एक यज्ञ चला है, अब से कुछ देर पहले मुझे भी आहुति डालने का सौभाग्य मिला है। अभी आचार्य जी बता रहे थे, ये मेरा सौभाग्य है कि जिस पवित्र धरती पर महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने जन्म लिया, उस धरती पर मुझे भी जन्म लेने

का सौभाग्य मिला। उस मिट्टी से मिले संस्कार, उस मिट्टी से मिली प्रेरणा आज मुझे भी महर्षि दयानंद सरस्वती के आदर्शों के प्रति आकर्षित करती रहती है। मैं स्वामी दयानंद जी के चरणों में श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ और आप सभी को हृदय से अनेक-अनेक शुभकामनाएं देता हूँ।

साथियों! जब महर्षि दयानंद जी का जन्म हुआ था, तब देश सदियों की गुलामी से कमजोर पड़कर अपनी आभा, अपना तेज, अपना आत्मविश्वास, सब कुछ खोता चला जा रहा था। प्रतिपल हमारे संस्कारों को, हमारे आदर्शों को, हमारे मूल्यों को चूर-चूर करने की लाखों कोशिशें होती रहती थी। जब किसी समाज में गुलामी की हीन भावना घर कर जाती है, तो अध्यात्म और आस्था की जगह आडंबर आना स्वाभाविक हो जाता है। मनुष्य के भी जीवन में देखते हैं... जो आत्मविश्वास हीन होता है, वो आडंबर के भरोसे जीने की कोशिश करता है। ऐसी परिस्थिति में महर्षि दयानन्द जी ने आगे आकर वेदों के बोध को समाज जीवन में पुनर्जीवित किया। उन्होंने समाज को दिशा दी, अपने तर्कों से ये सिद्ध किया और उन्होंने ये बार-बार बताया कि खामी भारत के धर्म और परम्पराओं में नहीं है। खामी है कि हम उनके वास्तविक स्वरूप को भूल गए हैं और विकृतियों से भर गए हैं। आप कल्पना करिए, एक ऐसे समय में जब हमारे ही वेदों के विदेशी भाष्यों को, विदेशी नैरेटिव को गढ़ने की कोशिश की जा रही थी, उन नकली व्याख्याओं के आधार पर हमें नीचा दिखाने की, हमारे इतिहास को, परंपरा को भ्रष्ट करने के अनेकविध प्रयास चलते थे, तब महर्षि दयानन्द जी के ये प्रयास एक बहुत बड़ी संजीवनी के रूप में, एक जड़ी बूटी के रूप में समाज में एक नई प्राणशक्ति बनकर के आ गए। महर्षि जी ने सामाजिक भेदभाव, ऊंच-नीच, छुआछूत आदि ऐसी समाज में घर कर गई अनेकों विकृतियों व अनेकों बुराइयों के खिलाफ एक सशक्त अभियान चलाया। आप कल्पना कीजिए, आज भी समाज की किसी बुराई की तरफ कुछ कहना है, अगर मैं भी कभी कहता हूँ कि भई कर्तव्यपथ पर चलना ही होगा, तो कुछ लोग मुझे डांटते हैं कि आप कर्तव्य की बात करते हो, अधिकार की बात नहीं करते हो। अगर २१वी सदी में मेरा ये हाल है तो डेढ़ सौ, पौने दो सौ साल पहले महर्षि जी को समाज को रास्ता दिखाने में कितनी दिक्कतें आई होंगी। जिन बुराइयों का ठीकरा धर्म के ऊपर फोड़ा जाता

था, स्वामी जी ने उन्हें धर्म के ही प्रकाश से दूर किया। महात्मा गांधी जी ने एक बहुत ही बड़ी बात बताई थी और बड़े गर्व के साथ बताई थी। महात्मा गांधी जी ने कहा था कि- हमारे समाज को स्वामी दयानंद जी की बहुत सारी देन है। लेकिन उनमें अस्पृश्यता के विरुद्ध घोषणा सबसे बड़ी देन है। महिलाओं को लेकर भी समाज में जो रूढ़ियाँ पनप गईं थीं। महर्षि दयानन्द जी उनके खिलाफ भी एक तार्किक और प्रभावी आवाज़ बनकर के उभरे। महर्षि जी ने महिलाओं के खिलाफ भेदभाव का खंडन किया, महिला शिक्षा का अभियान शुरू किया। और ये बातें डेढ़ सौ, पौने दो सौ साल पहले की हैं। आज भी कई समाज ऐसे हैं, जहां बेटियों को शिक्षा और सम्मान से वंचित रहने के लिए मजबूर करते हैं। स्वामी दयानंद जी ने ये बिगुल तब फूंका था, जब पश्चिमी देशों में भी महिलाओं के लिए समान अधिकार दूर की बात थी।

भाइयों और बहनों! उस कालखंड में स्वामी दयानन्द सरस्वती का पदार्पण, पूरे युग की चुनौतियों के सामने उनका उठकर के खड़े हो जाना, ये असामान्य था, किसी भी रूप में वो सामान्य नहीं था। इसलिए राष्ट्र की यात्रा में उनकी जीवंत उपस्थिति आर्य समाज के डेढ़ सौ साल होते हों, महर्षि जी के दो सौ साल होते हों और इतना बड़ा जन सागर सिर्फ यहां नहीं, दुनिया भर में आज इस समारोह में जुड़ा हुआ है। इससे बड़ी जीवन की ऊंचाई क्या हो सकती है? जीवन जिस प्रकार से दौड़ रहा है, मृत्यु के दस साल के बाद भी जिंदा रहना असंभव होता है। दो सौ साल के बावजूद भी आज महर्षि जी हमारे बीच में हैं और इसलिए आज जब भारत आजादी का अमृतकाल मना रहा है, तो महर्षि दयानंद जी की २००वीं जन्मजयंती एक पुण्य प्रेरणा लेकर आई है। महर्षि जी ने जो मंत्र तब दिये थे, समाज के लिए जो स्वप्न देखे थे, देश आज उन पर पूरे विश्वास के

साथ आगे बढ़ रहा है। स्वामी जी ने तब आवाहन किया था- 'वेदों की ओर लौटे!' आज देश अत्यंत स्वाभिमान के साथ अपनी विरासत पर गर्व का आवाहन कर रहा है। आज देश पूरे आत्मविश्वास के साथ कह रहा है कि, हम देश में आधुनिकता लाने के साथ ही अपनी परंपराओं को भी समृद्ध करेंगें। विरासत भी, विकास भी, इसी पटरी पर देश नई ऊंचाइयों के लिए दौड़ पड़ा है।

साथियों! आम तौर पर दुनिया में जब धर्म की बात होती है तो उसका दायरा केवल पूजा-पाठ, आस्था और उपासना, उसकी रीत-रस्म, उसकी पद्धतियां, उसी तक सीमित माना जाता है। लेकिन, भारत के संदर्भ में धर्म के अर्थ और निहितार्थ एकदम अलग हैं। वेदों ने धर्म को एक सम्पूर्ण जीवन पद्धति के रूप में परिभाषित किया है। हमारे यहाँ धर्म का पहला अर्थ 'कर्तव्य' समझा जाता है। पितृधर्म, मातृधर्म, पुत्रधर्म, देशधर्म, कालधर्म... ये हमारी कल्पना है। इसलिए हमारे संतों और ऋषियों की भूमिका भी केवल पूजा और उपासना तक सीमित नहीं रही। उन्होंने राष्ट्र और समाज के हर आयाम की ज़िम्मेदारी संभाली, holistic approach लिया, inclusive approach लिया, integrated approach लिया। हमारे यहाँ भाषा और व्याकरण के क्षेत्र को पाणिनी जैसे ऋषियों ने समृद्ध किया। योग के क्षेत्र को पतंजलि जैसे महर्षियों ने विस्तार दिया। आप दर्शन में, philosophy में जाएंगें, तो पाएंगें कि कपिल जैसे आचार्यों ने बौद्धिकता को नई प्रेरणा दी। नीति और राजनीति में महात्मा विदुर से लेकर भर्तृहरि और आचार्य चाणक्य तक, कई ऋषि भारत के विचारों को परिभाषित करते रहे हैं। हम गणित की बात करेंगें, तो भी भारत का नेतृत्व आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त और भास्कर जैसे महानतम गणितज्ञों ने किया। उनकी प्रतिष्ठा से ज़रा भी कम नहीं ही। विज्ञान के क्षेत्र में तो कणाद और वराहमिहिर से लेकर चरक और सुश्रुत तक अनगिनत नाम हैं। जब स्वामी दयानंद जी को देखते हैं, तो हमें पता चलता है कि उस प्राचीन परंपरा को पुनर्जीवित करने में उनकी कितनी बड़ी भूमिका रही है और उनके भीतर आत्मविश्वास कितना गजब का होगा।

भाइयों और बहनों! स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने अपने जीवन में केवल एक मार्ग ही नहीं बनाया, बल्कि उन्होंने अनेक अलग-अलग संस्थाओं, संस्थागत व्यवस्थाओं का भी सृजन

किया और मैं कहूंगा कि ऋषि जी अपने जीवन काल में, क्रांतिकारी विचारों को लेकर चले, उसको जीए। लोगों को जीने के लिए प्रेरित किया। लेकिन उन्होंने हर विचार को व्यवस्था के साथ जोड़ा, institutionalised किया और संस्थानों को जन्म दिया। ये संस्थाएं दशकों से अलग-अलग क्षेत्रों में कई बड़े सकारात्मक काम कर रहीं हैं। परोपकारिणी सभा की स्थापना तो महर्षि जी ने खुद की थी। ये संस्था आज भी प्रकाशन और गुरुकुलों के माध्यम से वैदिक परंपरा को आगे बढ़ा रही है। कुरुक्षेत्र गुरुकुल हो, स्वामी श्रद्धानंद ट्रस्ट हो, या महर्षि दयानन्द सरस्वती ट्रस्ट हो, इन संस्थानों ने राष्ट्र के लिए समर्पित कितने ही युवाओं को गढ़ा है। इसी तरह, स्वामी दयानंद जी से प्रेरित विभिन्न संस्थाएं गरीब बच्चों की सेवा के लिए, उनके भविष्य के लिए सेवा भाव से काम कर रही हैं और ये हमारे संस्कार हैं, हमारी परंपरा है। मुझे याद है अभी जब हम टीवी पर तुर्किये के भूकंप के दृश्य देखते हैं, तो बेचैन हो जाते हैं, पीड़ा होती है। मुझे याद है २००१ में जब गुजरात में भूकंप आया, पिछली शताब्दी का भयंकर भूकंप था। उस समय जीवन प्रभात ट्रस्ट के सामाजिक कार्य और राहत बचाव में उसकी भूमिका का तो मैंने खुद ने देखा है। सब महर्षि जी की प्रेरणा से काम करते थे। जो बीज स्वामीजी ने रोपा था, वो आज विशाल वटवृक्ष के रूप में आज पूरी मानवता को छाया दे रहा है।

साथियों! आजादी के अमृतकाल में आज देश उन सुधारों का साक्षी बन रहा है, जो स्वामी दयानंद जी की भी प्राथमिकताओं में थे। आज हम देश में बिना भेदभाव के नीतियों और प्रयासों को आगे बढ़ते देख रहे हैं। जो गरीब है, जो पिछड़ा और वंचित है, उसकी सेवा आज देश के लिए सबसे पहला यज्ञ है। 'वंचितों को वरीयता' इस मंत्र को लेकर हर गरीब के लिए मकान, उसका सम्मान, हर व्यक्ति के लिए चिकित्सा, बेहतर सुविधा, सबके लिए पोषण, सबके लिए अवसर, **'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास'** का ये मंत्र देश के लिए एक संकल्प बन गया है। बीते ९ वर्षों में महिला सशक्तिकरण की दिशा में देश तेज कदमों से आगे बढ़ा है। आज देश की बेटियाँ बिना किसी पाबंदी के रक्षा-सुरक्षा लेकर स्टार्टअप्स तक, हर भूमिका में राष्ट्र निर्माण को गति दे रही हैं। अब बेटियाँ सियाचिन

में तैनात हो रहीं हैं, और फाइटर प्लेन राफेल भी उड़ा रही हैं। हमारी सरकार ने सैनिक स्कूलों में बेटियों के एडमिशन उस पर जो पाबंदी थी, उसे भी हटा दिया है। स्वामी दयानंद जी ने आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ गुरुकुलों के जरिए भारतीय परिवेश में ढली शिक्षा व्यवस्था की भी वकालत की थी। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के जरिए देश ने अब इसकी भी बुनियाद मजबूत की है।

साथियों! स्वामी दयानन्द जी ने हमें जीवन जीने का एक और मंत्र दिया था। स्वामी जी ने बहुत ही सरल शब्दों में, उन्होंने बताया था कि आखिर परिपक्क कौन होता है? आप किसको परिपक्क कहेंगें? स्वामी जी का कहना था और वह बहुत ही मार्मिक है। महर्षि जी ने कहा था, 'जो व्यक्ति सबसे कम ग्रहण करता है, और सबसे अधिक योगदान देता है, वही परिपक्व है।' आप कल्पना कर सकते हैं। कितनी सरलता से उन्होंने कितनी गंभीर बात कह दी थी। उनका ये जीवनमंत्र आज कितनी ही चुनौतियों का समाधान देता है। अब जैसे इसे पर्यावरण के संदर्भ में भी देखा जा सकता है। उस सदी में, जब ग्लोबल वार्मिंग क्लाइमेट चेंज ऐसे शब्दों ने जन्म भी नहीं लिया था, उन शब्दों के लिए कोई सोच भी नहीं सकता था। उनके भीतर... महर्षि जी के मन में ये बोध कहाँ से आया? इसका उत्तर है- 'हमारे वेद, हमारी ऋचाएँ!' सबसे पुरातन माने जाने वेदों में कितने ही सूक्त प्रकृति और पर्यावरण को समर्पित हैं। स्वामी जी ने वेदों के उस ज्ञान को गहराई से समझा था, उनके सार्वभौमिक संदेशों को उन्होंने अपने कालखंड में विस्तार दिया था। महर्षि जी वेदों के शिष्य थे और ज्ञान मार्ग के संत थे। इसलिए, उनका बोध अपने समय से बहुत आगे का था।

भाइयों और बहनों! आज दुनिया जब sustainable development की बात कर रही है, तो स्वामी जी का दिखाया मार्ग, भारत के प्राचीन जीवनदर्शन को विश्व के सामने रखता है, समाधान का रास्ता प्रस्तुत करता है। पर्यावरण के क्षेत्र में भारत आज विश्व के लिए एक पथ प्रदर्शक की भूमिका निभा रहा है। हमने प्रकृति से समन्वय के इसी विज़न के आधार पर 'ग्लोबल मिशन लाइफ़' और उसका मतलब है Lifestyle for Environment! ये Lifestyle for Environment एक life mission की शुरुआत भी की है। हमारे लिए गर्व की बात है कि इस महत्वपूर्ण दौर में दुनिया के देशों ने G-

२० की अध्यक्षता की ज़िम्मेदारी भी भारत को सौंपी है। हम पर्यावरण को G-२० के विशेष एजेंडे के रूप में आगे बढ़ा रहे हैं। देश के इन महत्वपूर्ण अभियानों में आर्य समाज एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। आप हमारे प्राचीन दर्शन के साथ, आधुनिक परिप्रेक्ष्यों और कर्तव्यों से जन-जन को जोड़ने की ज़िम्मेदारी आसानी से उठा सकते हैं। इस समय देश और जैसा आचार्य जी(राज्यपाल डॉ.देवव्रतजी) ने वर्णन किया! आचार्य जी तो उसके लिए बड़े समर्पित हैं। प्राकृतिक खेती से जुड़ा व्यापक अभियान हमें गांव-गांव पहुंचाना है। प्राकृतिक खेती, गौ-आधारित खेती, हमें इसे फिर से गाँव-गाँव में लेकर जाना है। मैं चाहूँगा कि आर्य समाज के यज्ञों में एक आहुति इस संकल्प के लिए भी डाली जाए। ऐसा ही एक और वैश्विक आवाहन भारत ने मिलेट्स, मोटे अनाज, बाजरा, ज्वार वगैरह जिससे हम परिचित हैं और मिलेट्स को अभी हमने एक वैश्विक पहचान बनाने के लिए और अब पूरे देश के हर मिलेट्स की एक पहचान बनाने के लिए अब उसके लिए एक नया नामकरण किया है। हमने कहा है 'मिलेट्स को श्रीअन्न।' इस वर्ष संयुक्त राष्ट्र इंटरनेशनल 'मिलेट ईयर' मना रहा है। और हम तो जानते हैं, हम तो यज्ञ संस्कृति के लोग हैं और हम यज्ञों में, आहुति में जो सर्वश्रेष्ठ है, उसी को देते हैं। हमारे यहां यज्ञों में जौं जेसे मोटे अनाज या श्रीअन्न की अहम् भूमिका होती है। क्योंकि, हम यज्ञ में वो इस्तेमाल करते हैं जो हमारे लिए सर्वश्रेष्ठ होता है। इसलिए यज्ञ के साथ-साथ सभी मोटे अनाज- श्रीअन्न, देशवासियों के जीवन और आहार को उसे वो जीवन में ज्यादा से ज्यादा जोड़े, अपने नित्य आहार में वो हिस्सा बनें, इसके लिए हमें नई पीढ़ी को भी जागरूक करना चाहिए और आप इस काम को आसानी से कर सकते हैं।

भाइयों और बहनों! स्वामी दयानन्द जी के व्यक्तित्व से भी हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। उन्होंने कितने ही स्वतन्त्रता सेनानियों के भीतर राष्ट्रप्रेम की लौ जलाई थी। कहते हैं एक अंग्रेज अफसर उनसे मिलने आया और उनसे कहा कि भारत में अंग्रेजी राज के सदैव बने रहने की प्रार्थना करें। स्वामी जी का निर्भीक जवाब था! आँख में आँख मिलाकर उन्होंने अंग्रेज़ अफसर को कह दिया था- 'स्वाधीनता मेरी आत्मा और भारतवर्ष की आवाज है,

यही मुझे प्रिय है। मैं विदेशी साम्राज्य के लिए कभी प्रार्थना नहीं कर सकता।' अनगिनत महापुरुष, जिनमें लोकमान्य तिलक, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, वीर सावरकर, लाला लाजपतराय, लाला हरदयाल, श्यामजी कृष्ण वर्मा, चंद्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल जैसे लाखों लाखों स्वतंत्रता सेनानी और क्रांतिकारी महर्षि जी से प्रेरित थे। दयानंद एंग्लो वैदिक विद्यालय शुरू करने वाले महात्मा हंसराज जी हों, गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करने वाले स्वामी श्रद्धानंद जी हों, भाई परमानंद जी हों, स्वामी सहजानंद सरस्वती हों, ऐसे कितने ही देवतुल्य व्यक्तित्वों ने स्वामी दयानंद सरस्वती जी से ही प्रेरणा पाई। आर्य समाज के पास महर्षि दयानंद जी की उन सभी प्रेरणाओं की विरासत है, आपको वो सामर्थ्य विरासत में मिला हुआ है। और इसीलिए देश को भी आप सभी से बहुत अपेक्षाएं हैं। आर्य समाज के एक एक आर्यवीर से अपेक्षा है। मुझे विश्वास है, आर्य समाज राष्ट्र और समाज के प्रति इन कर्तव्ययज्ञों को आयोजित करता रहेगा, यज्ञ का प्रकाश मानवता के लिए प्रसारित करता रहेगा। अगले वर्ष आर्यसमाज की स्थापना का १५०वां वर्ष भी आरम्भ होने जा रहा है। ये दोनों अवसर महत्वपूर्ण अवसर हैं। और अभी आचार्य जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी के बलिदान तिथि के सौ साल यानी एक प्रकार से त्रिवेणी की बात हो गई। महर्षि दयानंद जी स्वयं ज्ञान की ज्योति थे, हम सब भी इस ज्ञान की ज्योति बनें। जिन आदर्श और मूल्यों के लिए वो जिए, जिन आदर्शों और मूल्यों के लिए उन्होंने जीवन खपाया और जहर पीकर के हमारे लिए अमृत दे करके गए हैं, आने वाले अमृतकाल में वो अमृत हमें मां भारती के और कोटि-कोटि देशवासियों के कल्याण के लिए निरंतर प्रेरणा दे, शक्ति दे, सामर्थ्य दे, मैं आज आर्य प्रतिनिधि सभा के सभी महानुभावों का भी अभिनंदन करता हूं। जिस प्रकार से आज के कार्यक्रम को प्लान किया गया है, मुझे आकर के ये जो भी १०-१५ मिनट इन सब चीजों को देखने का मौका मिला, मैं मानता हूं कि प्लानिंग, मैनेजमेंट, एजुकेशन हर प्रकार से उत्तम आयोजन के लिए आप सब अभिनंदन के अधिकारी हैं।

बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

बहुत-बहुत धन्यवाद...।

***

विलक्षण युगपुरुष की द्विजन्मशताब्दी

– माधव के.देशपांडे
(पूर्व मंत्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा)

१२ फरवरी १८२४ को मोरवी संस्थान(गुजरात) के टंकारा गांव में एक बालक ने जन्म लिया । जैसा कि इस बालक ने आगे चल कर कहा था कि मनुष्य अल्पज्ञ होने से वह भविष्य के बारे में जान नहीं सकता! यही बालक आगे चल कर बडा होकर समग्र विश्व को वेद का विशुद्ध ज्ञान प्रदान करनेवाला युगपरुष बनेगा, यह कोई भी कह नहीं सका। एक संपन्न औदिच्य ब्राह्मण परिवार में जन्मे इस बालक का नाम मूलशंकर था। कुलपरंपरा से यह परिवार शिव का भक्त अर्थात शैव पंथी था। बाल्यकाल में ही मूल शंकर को संस्कृत और वेद पढना सिखाया गया था । अल्पायु में ही इसने यजुर्वेद कंठस्थ कर लिया।

एक समय महाशिवरात्रि के पर्वपर मूलशंकर को उपवास का व्रत रखने को कहा गया। पिता के साथ अन्य सारे लोग शिव मंदिर चले गये। बालक मूलशंकर भी मन्दिर गया। उसे कहा गया कि आज तुम्हें वास्तविक शिवजी के दर्शन होंगें ।उस समय किसी को यह पता नही था कि अब क्या होनेवाला है ? स्वयं मूलशंकर भी नहीं जानते थे कि इस घटना का आगे क्या परिणाम निकलेगा ? देर रात में जब सारे निद्रा में थे, तब शिवजी की पिंडी पर चढकर कुछ चुहे प्रसाद खाने लगे। तब वह बालक कहने लगा– 'यह क्या ? यह शिव, भगवान नहीं हो सकता।' पं.गंगाप्रसाद उपाध्याय कहते हैं कि दयानंद ने बाल्यावस्था में केवल एक छोटासा कंकड संसार के विचाररुपी सागर में फेंक दिया था। इस कंकड ने अपना कार्य भली भांति किया । इसकी तरंगे सारी दुनिया में फैल गयी कि, 'यह भगवान नहीं हो सकता।' यह सोच हमें दयानंद देते हैं । यहाँ ध्यान देने की एक बात है कि उस समय उनकी आयु मात्र १३ वर्ष की थी ।

इस घटना के बाद एक वर्ष में ही दयानन्द के विचारों मे और एक तूफान आया । प्यारी बहन और पूज्य चाचा की मृत्यु हुई, जिससे वे अत्यंत विचलित हुए। परिणाम यहाँ तक हुआ कि एक दिन दयानन्द ने अपना वैभवशाली व सम्पन्न परिवार भी छोड दिया । सच्चे ईश्वर की खोज और मृत्यु (दुःख) पर विजय पाने के लिये भारतवर्ष

का भ्रमण किया। वनस्थलियों, नदीकिनारों, पर्वतों, आश्रमों में स्थित साधुओं से मिलकर योगविद्या प्राप्त की। स्वामी पूर्णानन्दजी से संन्यास ले लिया और मूलशंकर के '**दयानंद सरस्वती**' बन गए। अनेकों साधकों व योगियों से मिले, किन्तु किसी से भी मन की शान्ति नही हुई । अन्त में मथुरा में प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानंद सरस्वती के दर्शन हुए और उनके सान्निध्य में तीन वर्ष तक रह कर व्याकरण महाभाष्य पढे, जो वेदविद्या को जानने व समझने हेतु कुञ्जी सिद्ध हुए । गुरुदेव ने गुरु दक्षिणा के रुप मे दयानन्द को कहा कि 'बेटा! इस सत्य विद्या को सफल कर दिखाओ! देश का उपकार करो, समाज का उद्धार करो, मत मतान्तरों की अविद्या को मिटाओ तथा वैदिक धर्म को सर्वत्र फैलाओ । यही मेरी दक्षिणा है।' तब गुरुजी की आज्ञा शिरोधार्य मानकर दयानन्द तत्काल कहते हैं- 'गुरुवर ! आपकी आज्ञा शिरोधार्य है । मैं आयुभर तक इसी के लिए प्रयत्नशील रहूंगा।' प्रसिद्ध लेखक प्रा.श्री राजेन्द्रजी जिज्ञासु लिखते हैं- 'क्या और कैसा विचित्र दृश्य था? कोई विश्वविद्यालय का दीक्षान्त समारंभ नहीं था, न कोई उपाधि Degree थी । प्रभुकृपा से संसार में इन जैसे अनेकों गुरु तथा शिष्य उत्पन्न हो!' महर्षि दयानन्द ने अपनी सारी शक्ति और जीवन इस आज्ञा की पूर्ति में लगा दिया ।

ऐसे अलौकिक दिव्य ज्ञानयुक्त गुरुदेव से विदा लेकर म. दयानन्द सरस्वती जब वचनपूर्ति हेतु कार्यक्षेत्र में उतरते हैं। तब उन्होंने जीवन की दो धाराएं निश्चित की। एक वैदिक धर्म के प्रचार प्रवचन, शास्त्रार्थ, लेखन, साहित्य, प्रकाशन आदि किया। तथा दूसरी वैदिक संस्कृति को छोडकर जानेवालों की रक्षा! और जो गये हैं, उनकी वापसी...! इत्यादि। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिये स्वामीजी ने हजारो मील की यात्रा की, हजारो प्रवचन दिये, सैंकडो शास्त्रार्थ किये, जोकि लिखित रुप में रहे। सत्यार्थप्रकाश, संस्कार विधि, ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका तथा अन्य अनेकों ग्रंथ लिखे । वेदों के आर्यभाषा में सरलतया भाष्य किये। इस तरह सामान्य जनों के लिये वेदज्ञान उपलब्ध कराया। वेदों को हाथ में लेकर विधर्मियों को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। यह हजारो वर्षों के उपरान्त भारत में प्रथम बार हो रहा था । भारत का एक संन्यासी देशी व विदेशी साम्प्रदायिक मिथ्या बातों पर प्रतिवाद कर रहा था । यह था १९-२३ मार्च १८७७ का चांदपूर का प्रसिद्ध

शास्त्रार्थ! विरोधी लोग शास्त्रार्थ दो दिन के बाद छोड कर भाग गये । अंत में पादरी स्कॉट ने जो कहा वह दयानंद कैसे थे यह समझने में हमें आसान होगा। उन्होंने कहा था- 'सुनो भाई लोगों! पंडितजी इसका उत्तर हजार प्रकार से दे सकते हैं । हम और तुम हजारो मिलकर भी इनसे बात करे, तो भी पंडितजी के बराबर उत्तर दे सकते हैं।' ऐसे थे विलक्षण दयानंद!

दि. ३० मई १८६६ को स्वामी दयानंद का शास्त्रार्थ पुष्कर में पादरी लोगों के साथ हुआ था । विषय था- 'ईश्वर, जीव और सृष्टि क्रम !' स्वामी जी ने सारे प्रश्नों के उत्तर दिये । शास्त्रार्थ में पादरियों ने कुछ वेदमंत्रों के संदर्भ दिये । स्वामीजी ने तुरन्त कहा- 'ये वेदमंत्र नहीं है ! ये तो वेदों की पुस्तके हैं । इसमे वह मंत्र बताओ !' तब वे देर तक ढूंढने के बाद भी मंत्र बता नहीं सके। ऐसे थे विलक्षण दयानंद! 'शास्त्रार्थ के माध्यम से दयानन्द ने उस समय के समस्त सम्प्रदायों में व्याप्त अविद्या, अज्ञान से जो कुप्रथाएं और अंधविश्वास उत्पन्न हुआ था ,उसे दूर करने का प्रयास किया और भविष्य में वैदिक धर्म का प्रचार और मानव जाति की रक्षा के लिए एक संस्था की स्थापना की,जिसका नाम रखा गया **'आर्य समाज।'**

आर्य समाज क्या है ? इसको या तो स्वयं आर्य समाज जानता है अथवा जो आर्य समाज के सिद्धान्तों को जानता हो,वह समझ सकता है। आर्य समाज वेद का प्रचारक है । वेद ईश्वरीय ज्ञान है । ईश्वर किसी एक देश, काल अथवा विशिष्ट व्यक्ति अथवा जाति का पक्षधर नहीं है, बल्कि वह तो समस्त संसार का है, समग्र मानवमात्र के लिए है । ईश्वर के नियम सब के लिये समान हैं । प्रत्येक देश में राज्य करने का अधिकार उस देश के निवासियों का है, न कि किसी अन्य देश का ! इसलिए भारत ने कभी भी किसी भी राष्ट्रपर आक्रमण किया हो, ऐसा इतिहास में एक भी उदाहरण नही है । आर्य समाज ने अपना व्यासपीठ महिलाओं के लिए खोल रखा है । मानवमात्र को बिना किसी भेदभाव के वेदज्ञान उपलब्ध कराया है। ऐसे आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानंद ने की थी ।

दयानंद में ऐसी कौनसी विशेषताएं थी, जो उनके अनुयायियों, राजा -महाराजाओं से ले कर सामान्य जनों तक सभी शिष्य बन गये थे। उनमें मुसलमान थे, इसाई थे, जैन बौद्ध थे,

पौराणिक भी थे । कुछ संस्कृतज्ञ ब्राह्मण भी थे । इतना ही नहीं ,उस समय के न्यायाधीश भी थे । उनकी सबसे बडी विशेषता यह थी कि वे सबसे प्राचीन भी थे और सबसे आधुनिक भी! दयानन्द ने हमें आधुनिक बनाया।साथ ही हम सभी को सोच विचार करने की तर्कबुद्धि भी प्रदान की। दुर्भाग्य से उस समय के उन लोगों ने दयानंद को पसन्द नहीं किया ।

म. दयानंद कहते हैं 'केवल मानने से सवाल हल नहीं होते, वे तो जानने से होते हैं । ऐसा कौनसा क्षेत्र है कि जिसके विषय में दयानन्द ने हमें आधुनिक विचार नहीं दिये ? वे हमें एक वैदिक सिद्धांत समझाते है कि जिसने अपराध किया, उसी को दंड देना चाहिए । काम किसी ने किया और दंड किसी दूसरे को... यह नहीं दिया जा सकता ! जो बच्चे अनाथ हैं, जिनको समाज अवैध कहकर उसकी ताडना करता है । यह अवैध शब्द ही गलत है । बच्चा अवैध नहीं है, वह तो कानून के नियमानुसार ठीक ही पैदा हुआ है । उसके माता-पिता तो उत्तम ही हैं। आप उस बालक को अवैध नहीं कह सकते । तुम्हारे कानून से भले ही वह अवैध होगा, किन्तु प्रकृति के कानून से वह अवैध नहीं है । दयानन्द कहते हैं- दंड उसी को देना चाहिए, जिसने कानून तोडा है। बच्चे ने कानून नहीं तोडा । ऋषि दयानंद की यह न्यायोचित आवाज है, बताओ, यह आधुनिकता है या पुरातनता?

तो दयानंद जितने प्राचीन है, उतने ही वे आधुनिक भी नजर आते हैं । इसलिये वे धर्म और विज्ञान में अंतर नहीं मानते थे । दयानन्द ने बताया कि ईश्वर की वैदिक मान्यता वस्तुतः नैतिक आदर्शवादी है । सदाचार और सद्गुण एवं जीवन के नैतिक मूल्य का आदर्श मॉडेल तो ईश्वर ही है । अत: हमें भी ईश्वर के कुछ गुण प्राप्त करके सद्गुणी बनना चाहिए । ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना करना वस्तुतः उसके गुण अपने में लाना है । दयानंद ने 'यज्ञ' इस परोपकारी कार्य को सामान्य जन को सहज और सुलभ बना कर मानवमात्र को उसका अधिकार दिलाया। अन्त में वे कहते हैं- 'मैंने कुछ नया मत स्थापित नहीं किया है । जो सनातन वैदिक परंपरा है, जो प्राचीन ऋषि ब्रह्मा से लेकर मुनि जैमिनी तक मानते आये हैं, उसी को मैंने पुनः स्थापित किया है।' **ऐसे थे विलक्षण महर्षि दयानंद सरस्वती।**

***

- आर्य समाज पिम्परी, पुणे
९८२२२९५५४५

राज्य में म.दयानन्द जयंती उत्साहपूर्वक

महाराष्ट्र सभा के आवाहन पर राज्य की विभिन्न आर्य समाजों में महर्षि दयानन्द की २००वी जयंती का शुभारम्भ कार्यक्रम उत्साहपूर्वक मनाये गये। नई दिल्ली में आयोजित ऋषि जयंती के उद्घाटन समारोह में उपस्थित प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रजी मोदी का उद्घाटकीय भाषण स्क्रीन पर्दों पर तथा मोबाईलद्वारा प्रसारित हुआ, जिसे आर्यजनों ने बडे उत्साह के साथ देखा और सुना। इस उपलक्ष्य में पुणे, लातूर, परली, परभणी, औराद शाहजानी, छ.सम्भाजीनगर, नासिक आदि स्थानों पर प्रधानमन्त्री के समारोह के होर्डींग लगाये गये थे। साथ ही यज्ञ एवं भजन कार्यक्रम भी सम्पन्न हुए। कई स्थानों पर छात्रों के लिए विविध प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया था। सभा के पदाधिकारी नयी दिल्ली में आयोजित मुख्य समारोह में सम्मिलित हुए थे।

पांच स्थानों पर 'आर्य प्रशिक्षण' शिविर सम्पन्न

सामान्य लोग आर्य सिद्धान्तों से सुपरिचित व सुसंस्कारित हो, इस पवित्र उद्देश्य से महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में राज्य में चार स्थानों पर तथा कर्नाटक में एक स्थानपर 'आर्यत्त्व संस्कार प्रशिक्षण शिविर' सम्पन्न हुए। धाराशिव (२८ व २९ जनवरी), गांधी चौक, लातूर (१ व २ फरवरी),सोलापुर(४ व ५ फरवरी), बसवकल्याण (७ व ८ फरवरी) तथा पिम्परी पुणे (१२ व १३ फरवरी) इन स्थानों पर आयोजित इन शिबिरों में दिल्ली से पधारे वैदिक विद्वान आचार्य व श्री हनुमान प्रसादजी एवं आचार्य पं.श्री अश्विनीकुमारजी ने मार्गदर्शन किया। उन-उन शिविरों में अनेकों उत्साही आर्य कार्यकर्त्ता तथा कुछ नये जिज्ञासु लोग सम्मिलित हुए। स्थानिक आर्य समाजों के पदाधिकारियों ने तथा संयोजक श्री विजयकुमारजी कानडे एवं श्री ओमप्रकाशजी वाघमारे ने इन आयोजनों में विशेष भूमिका निभाई।

।।ओ३म्।।

माझा मराठीची बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें। मेळवीन।। (संत ज्ञानेश्वर)

* मराठी विभाग *

* उपनिषद संदेश *

ब्रह्मज्ञानाने मृत्यूपासुन मुक्तता

अशब्दमस्पर्शमरुपमव्ययं तथाऽरसं नित्यमगन्धवच्च यत्।
अनाद्यनन्तं महतः परं ध्रुवं निचाय्य तं मृत्युमुखात्प्रमुच्यते।।

अर्थ – ब्रह्मतत्त्व हे शब्दगुणयुक्त असलेल्या आकाशाहून वेगळे, स्पर्शगुणयुक्त वायुहून वेगळे, रुपगुणयुक्त तेजाहून वेगळे, उत्पत्ती व विनाशाहून रहित तसेच रसगुणयुक्त पाण्याने भिन्न व सतत विद्यमान असणाऱ्या या गंधवती पृथ्वीपेक्षा वेगळे आहे. आणि तसेच जे कारणरहित व अंतरहित अशा महान पदार्थांपेक्षाही सूक्ष्म, निश्चल, एकरस आहे. अशा त्या ब्रह्म्याला जाणूनच माणूस निश्चितपणे मृत्यूच्या मुखातून सुटू शकतो.

(कठोपनिषद–३/१५)

* दयानंद वाणी *

आंधळ्यासारखी स्थिती

आजकाल समाजाची आंधळ्यासारखी स्थिती झाली आहे. हे लोक नवीन अनार्ष ग्रंथ वाचतात. प्राकृत भाषेमध्ये शिक्षण घेणारे हे लोक ऋषिप्रणीत ग्रंथांचे अध्ययन करीत नाहीत नवीन क्षुद्रबुद्धिकल्पित संस्कृतचे आणि इतर भाषांचे ग्रंथ वाचून ते एकमेकांची निंदानालस्ती करीत असतात. त्यांनीच हा निराधार वितंडवाद माजविला आहे. त्यांचे म्हणणे बुद्धिमंतांनी किंवा इतरांनी मानण्याच्या योग्यतेचे नाही. कारण आंधळ्यांच्या मागून आंधळे चालत राहिले, तर त्यांना दुःख होणारच. त्याचप्रमाणे आजकालच्या या अल्पविद्यायुक्त, स्वार्थी, इंद्रियासक्त पुरुषांची लीला जगाचा नाश करणारी आहे.

(सत्यार्थ प्रकाश, आठवा समुल्लास)

आर्य समाज कसा वाढेल?

- पं.राजवीर शास्त्री

परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्वातील मानवमात्रामध्ये सख्य व ऐक्य नांदावे, तसेच सुख-शांती व समृद्धीचा वास असावा आणि प्राणिमात्राचे कल्याण व्हावे, याच तळमळीपोटी स्वामी दयानंद सरस्वती यांनी १८७५ साली आर्य समाजाची स्थापना केली. त्यांनी घालुन दिलेल्या दहा-नियमांचा

बारकाईने अभ्यास केल्यास ते दहा नियम फक्त आर्य समाजापुरतेच सीमित नसून ते दाही दिशांना मान्य होतील, असे व्यापक नियम आहेत. हे आपणांस लक्षात येते. त्याची व्यापकता लक्षात घेऊनच कांही विद्वानांनी त्या दहा नियमांना विश्वशांतीचे **'सुवर्णसिद्धांत'** म्हणून प्रशंसिले आहे.

विश्वशांती या अभियानाला स्वामीजींनी भारतापासून सुरुवात केली. आर्य समाजाच्या माध्यमातून हे कार्य कार्यान्वित झाले. भारतीयांची दुर्दशा दूर करण्यासाठी व दिशाहीन देशवासियांना प्रकाशाची, प्रगतीची, विकास, उत्कर्ष व उन्नतीची दिशा मिळावी, यासाठी त्यांनी एकच धर्म-'वैदिक धर्म', एकच राष्ट्रभाषा 'हिंदी' व एकच राष्ट्र 'आर्य राष्ट्र (स्वराष्ट्र)' हा त्रिसूत्रीचा नारा दिला. पारतंत्र्य हे दुःखदायीच ठरते. त्यामुळे इंग्रजांच्या गुलामगिरीतून भारताला मुक्त करणे, याला त्यांनी प्राधान्य दिले. परकीय सत्तेला जुगारुन लावण्यासाठी भारतीयांमध्ये सख्य व ऐक्य निर्माण करणे गरजेचे होते. म्हणून त्यांनी सर्वांचा एकच धर्म व एकच राष्ट्रभाषा असण्याचा आग्रह धरला. अनेकतेत एकता त्यांना मान्य नव्हती. शरीराने एकत्रित येणे म्हणजे एकता नव्हे. एकतेसाठी मने (मते) एक झाली पाहिजेत. विचार एकमेकांशी जुळणारे असतील, तर सख्य व ऐक्य निर्माण होते. परस्पर विरुद्ध विचारांच्या व्यक्तींमध्ये मित्रता राहू शकत नाही. ते एकत्रित राहू शकत

नाहीत. जरी ते एका रक्ताचे असतील, तरीही रक्ताचे नाते जुजबी असते तर विचारांचे नाते हे टिकावू असते. तसेच ते सुखावही असते. जात-पात, मत-पंथ व संप्रदायांमध्ये विभागलेल्या जनतेला वेदांचा विचारच एकत्रित आणू शकतो, असे महर्षी दयानंदांचे ठाम मत होते. स्वामीजींचा हा विचार जनतेला पटू लागला. अनुयायांची संख्या वाढू लागली. कार्याला वेग आला. अनेक अनुयायांनी त्रिसूत्री उपक्रमासाठी स्वत:ला झोकून दिले. त्याचा परिपाक म्हणून भारत देश स्वतंत्र झाला. स्वराज्य अस्तित्वात आले, पण सुराज्य व्हायचे शेष आहे. ही उणीव भरून काढण्याची जबाबदारी आजच्या आर्य समाजाच्या कार्यकर्त्यांची आहे. हिंदी भाषा ही राष्ट्रभाषा व्हावी, यासाठी स्वामीजींनी प्रयत्न केला. ही भाषा त्यांच्या दृष्टीने कुलकामिनी होती. परंतु आज सरकारने व जनतेने हिंदीला तृतीय स्थानी आणले आहे. मातृभाषा किंवा प्रांतीय भाषेला दुय्यम स्थानी ठेवले आहे.इंग्रजीला प्रथमस्थानी प्रतिष्ठित केले गेले आहे. आज भारतातील नवीन पिढी संस्कृत, हिंदी व मातृभाषा यांबाबत उदासीन आहे. या भारतीय भाषा कुलकामिनी न होता कमकुवत होताहेत, हे निश्चितच चिंताजनक आहे.

जशी भाषाबाबतची अवस्था झाली आहे, तशीच वैदिक धर्माचीही अवस्था झाली आहे. **'मतामतांचा गलबला-कोणी पुसेना कोणाला'** किंवा **'जो जे मति सापडला, तयासी तेचि थोर'** अशी सद्यस्थिती आहे. **'सत्य के ग्रहण करने और असत्य त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।'** या नियमाचा अवलंब करून मत-पंथ-संप्रदायरुपी डबक्यातून कुणीही बाहेर यायला तयार नाहीत. **'अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।'** हे सर्वांना कळतेय पण वळत का नाही? **'जातीसाठी माती खाण्या'**पलीकडे कुणाचीही मती उडी घेत नाही? **'सबकी उन्नति में अपनी उन्नति'** हे असे कसे काय समजायचे? हे कोडे ही उलगडून पाहण्याची कोणाची इच्छा दिसत नाही. जात-पात, मत-पंथ(संप्रदाय), प्रांत व भाषा यांमध्ये राजकारण अडकलेलं आहे. त्यामुळे सख्य व ऐक्य सर्वांना हवं असून सुद्धा ते स्थापित करणे कठीण आणि गुंतागुंतीचे झाले आहे. पाखंडप्रिय व विघटनप्रिय जनतेला वैदिक धर्माकडे वळविणे, हे सहज सोपे काम नाही. परंतु कष्टसाध्य नक्कीच आहे.

चिमुटभर मिठाने मणभर दुधाला

नासवता येणे शक्य आहे. पण चिमटभर साखरेने मणभर दुधाला गोडवा आणता येणे शक्य नाही. ओंजळीने साखर टाकावी लागते. तसे मुठभर माणसाने हे चित्र बदलणे शक्य नाही. या दृष्टीने आर्य समाजाने पावले उचलली पाहिजेत. त्यांना सुसंघटित केले पाहिजे. ज्या उद्देशांनी महर्षी दयानंदांनी आर्य समाजाची स्थापना केली होती, त्याच उद्देशाने आर्य समाजाच्या सदस्यांनी सदस्यत्व ग्रहण करायला हवे. प्रत्येक सदस्यांमध्ये 'मी राहो न राहो, पण आर्य समाज जीवंत व सशक्त राहिलाच पाहिजे,' ही भावना असली पाहिजे.

आर्य समाजाच्या, प्रांतीय सभेच्या व सार्वदेशिक सभेच्या वतीने विविध उपक्रमांचे आयोजन करून जनसामान्यांपर्यंत वेदांचा विचार पोंहोचविण्याचा, वैदिक धर्म व संस्कृतीची ओळख करून देण्याचा प्रयत्न केला जातो. साप्ताहिक सत्संग, वैदिक पर्व, वार्षिक उत्सव, श्रावणी वेद सप्ताह, ध्यान-प्राणायाम शिबिर, पुरोहित प्रशिक्षण शिबिर, निबंध, वक्तृत्त्व व श्लोक गायन इ. विविध स्पर्धांचे आयोजन व वैदिक साहित्य प्रकाशन व वितरण अशा मार्गाने जनमानसाला प्रभावित करण्याचा प्रयत्न केला जातो. हे सर्वविध उपक्रम मला ज्ञात आहेत. पण या सर्वांना आर्यजनांकडून मिळणारा प्रतिसाद मात्र दिसत नाही. एक पुरोहित व प्रचारक या नात्याने मला असे वाटते की, वैदिक गुरुकुले, उपदेशक विद्यालये व आर्य समाजाचा साप्ताहिक सत्संग याकडे अधिक लक्ष्य देणे गरजेचे आहे. गुरुकुल व उपदेशक विद्यालयातून प्रशिक्षित विद्वान युवक-युवतींना आर्य समाजाच्या कामात जुंपले गेले पाहिजे. यातच गुरुकुल व उपदेशक विद्यालयाची सार्थकता आहे. गुरुकुलांतून व उपदेशक विद्यालयांतून ज्ञान प्राप्त करून बाहेर निघालेली स्नातक मंडळी अखेर जातात कुठे, करतात काय ? ते का आर्य समाजाच्या मैदानात उतरतांना दिसत नाहीत? त्यांना दोष देण्याअगोदर आर्य समाजाच्या पदाधिकाऱ्यांनी आपलंही याबाबतीत कांही चुकतयं का? याचं आत्मनिरीक्षण केलं पाहिजे. कामे करणाऱ्यांची कमतरता आहे. कांही बोटावर मोजण्याइतके आर्य समाज असतील की जिथे सुयोग्य व निष्ठावान पुरोहित, प्रचारक व भजनोपदेशकांची नियुक्ती केली गेली असेल! किंवा स्थानिक सेवाभावी विद्वानांना सत्संगाशी जोडले गेले असेल! जेणेकरून सत्संगाचा कार्यक्रम निरस व

कोरडा न होता तो सुंदर व रंजक होतो. नाही तर बऱ्याच आर्य समाजात 'सत्संग' देखील नियमित व वेळेवर होत नाहीत. ते झाले तरी तिथे शुद्ध व मधुर मंत्रोच्चार होत नाही. हवनकुंड व हवनपात्रे स्वच्छ घासलेली व धुतलेली नसतात. कसल्या तरी समिधा व खराब, जुनाट सामग्री घेऊन कसे तरी यज्ञ करायचे? दोन भजने म्हणायची..., शांतीपाठ झाला की घाईघाईने घराकडे निघायचे! जातांना आर्य समाज भवनाचा दरवाजा एकदा बंद केला की तो दुसऱ्या रविवारीच उघडायचा! अशी दुर्दैवी स्थिती आहे. आहे त्या चार कार्यकर्त्यांना ही साप्ताहिक सत्संगात नाईलाजाने जावे लागते. पण सत्संग बंद ठेवणे मनाला पटत नाही. पुन्हा सत्संग बंद पडला तर लोक नावे ठेवतात. सभेचे अधिकारी जाब विचारतात. म्हणून तेवढा यज्ञ करतात. त्यात नवी ऊर्जा किंवा उत्साह कुठेही दिसत नाही. मग ही मरगळ झटकायची असेल..., कार्यकर्त्यांची व सत्संग प्रेमीजनांची वर्दळ वाढवायची असेल... तर प्रत्येक आर्य समाजामध्ये-प्रशिक्षित व विद्वान पुरोहितांची नेमणूक करणे गरजेचे आहे.

अशा एक नव्हे तर अनेक समस्या आहेत, ज्या आम्हां सर्व आर्य बाधवांना दूर करावयाच्या आहेत. '**आर्य समाज ही आमची माता आहे**', असा विचार हृदयी बाळगून या संस्थेच्या संवर्धनाकरिता प्रयत्न करणे ही काळाची गरज आहे. आज आपल्या समाजात व देशातच नव्हे तर संपूर्ण जगात मोठ्या प्रमाणात विविध समस्या वाढत आहेत. त्यामुळे प्रत्येक मानव दुःखाचे जीणे जगत आहे. या सर्व प्रश्नांचे समाधान कोणाकडेच नाही! केवळ आर्य समाज हीच चळवळ संपूर्ण जगाला सावरू शकते. म्हणून आर्य कार्यकर्त्यांनी, विद्वानांनी, पुरोहितांनी, पदाधिकाऱ्यांनी मोठ्या उत्साहाने या संस्थेचा विचार सर्वसामान्य जनतेपर्यंत पोहोंचविण्या साठी कटिबद्ध राहणे अत्यंत गरजेचे आहे. आपल्या स्वतःच्या पवित्र आचरणातून आर्यत्व दिसावयास हवे. याकरिता सर्वांनी आत्मपरीक्षण करुन महर्षी दयानंदांचा हा मानवोपकारी सिद्धांत प्रसारित करण्याचा संकल्प करूया..!

– आर्य समाज, बुधवार पेठ, सोलापुर (मो.९८२२९९००११)

हैदराबाद संग्रामातील पहिले बलिदान –

हुतात्मा वेदप्रकाश आर्य

– हरिदास सुरेशराव बाबळसुरे

नुकताच २३ फेब्रुवारी २०२३ हा दिवस लोटला. संपूर्ण मराठवाड्यात हैद्राबादच्या मिर उस्मान अली खान या सातव्या निजामाच्या पाशवी अत्याचारातून मुक्त होऊ पाहणाऱ्या मुक्तिसंग्रामातील पहिले बळी गेलेले हुतात्मा वेदप्रकाश आर्य यांचा स्मृतिदिवस. यानिमित्त शासकीय पातळीवरुन हैद्राबाद मुक्तिसंग्रामाच्या अमृत महोत्सवी वर्षी जे अनेकविध उपक्रम होत आहेत, त्यात वेदप्रकाश यांचे व त्यांच्या हौतात्म्याचे स्मरण व्हावे. म्हणून त्यादिवशी१ मिनिट मौन पाळायचे ठरवले होते. ही कृती पुढील पिढीसाठी आपल्या पराक्रमी पूर्वजांचे स्मरण व्हावे, यासाठी आवश्यकच आहे. पण कोण होते हे वेदप्रकाश आर्य? हे मात्र अनेकांना माहित नसेल.

हिंदू धर्मातील अंधश्रद्धा, बुवाबाजी,पांखडी वृत्ती दूर करण्यासाठी व देशाला इंग्रजासहित इतर परकीय आणि धर्मांध जुलमी सत्तांना घालवण्यासाठी महर्षी स्वामी दयानंद सरस्वती यांनी वेदप्रामाण्याचा प्रसार करण्यासाठी 'आर्य समाजाची' स्थापना केली. अतिशय जाज्वल्य राष्ट्रभक्तीचे संस्कार देणाऱ्या आर्य समाजाची मराठवाड्यातील पहिली शाखा बीड जिल्ह्यातील धारुर या ठिकाणी व दुसरे केंद्र निलंगा या ठिकाणी सुरू झाले आणि तिसरे केंद्र सुमारे १९३३-३४ च्या सुमारास जागरुक अशा गुंजोटी गावात सुरू झाले.

गुंजोटी(ता.उमरगा जि.धाराशिव)हे गाव अतिशय जागरूक! येथील श्री शिनाई मंदिरात (श्रीकृष्ण मंदिरात) आर्य समाजाच्या विचारांनी भारलेल्या तरुणांच्या बैठका होऊ लागल्या. कारण हे मंदिर म्हणजे केवळ इतर मंदिराप्रमाणे भक्तांच्या दर्शनासाठी रांगा आणि नैवेद्याचे विधी चालणारे मंदिर नव्हते ; तर याच ठिकाणाहून ज्या काळात राष्ट्रीय शिक्षणाचा सामान्य जनतेला गंध नव्हता. त्यावेळी इ.स.१९२७ ला श्रीकृष्ण शिक्षण संस्थेचे बीज इथेच उगवले आणि राष्ट्रनिर्मात्या श्रीकृष्णाच्या कालसुसंगत कार्याचे धडे या पवित्र मातीत अनेक तरुण गिरवायला लागले.

त्या अनेक तरुणांपैकी वेदप्रकाश आर्य हा राष्ट्रीय विचारांनी भारलेला तरुण गुंजोटी आणि पंचक्रोशीतील औराद,उमरगा,कदेर,नागराळ,पळसगाव या व इतर गावात जाऊन आर्यसमाजाच्या विचारांचा प्रसार करु लागला. अनेक तरुण एकत्र यायला लागले आणि जुलमी निजामाच्या पोलिसांची वक्रदृष्टी या तरुणांचा म्होरक्या वेदप्रकाश यांच्यावर पडली.

वेदप्रकाश आर्य यांचे मूळ नाव दासमय्या शिवबसप्पा हारके..! आईचे नाव रेवाबाई.श्रीकृष्ण शिक्षण संस्थेत इ.५वी पर्यंत शिकलेला आणि राष्ट्रीय विचारांचे संस्कार तेथूनच घेतलेल्या आणि कोष्टी(विणकर)समाजात जन्मलेल्या आर्थिक दृष्टीने अतिशय गरिब कुंटूंबात जन्मलेल्या या तरुणाने व्यायामाने आपले शरीर कमावले होते.त्याचवेळेस उदगीरचे श्यामलाल आणि बन्शीलाल यांच्या आर्यसमाजाच्या विचारांचा झंझावात संपूर्ण मराठवाड्यात घुमू लागला आणि गुंजोटी गावातही बन्शीलाल यांची सभा व्हावी असे इथल्या तरुणांना वाटायला लागले .तसे त्यांना निमंत्रणही गेले.त्यांनी गुंजोटीला येण्याचे मान्यही केले.

मग काय गुंजोटी आणि आसपासच्या गावात चैतन्याचा संचार सुरु झाला. सभेच्या दिवशी आसपासच्या गावातील अनेक तरुण आणि नागरिक गुंजोटी गावात जमायला लागले. उमरग्याहून बन्शीलाल यांना बैलगाडीने घेऊन येण्याची जबाबदारी अर्थातच वेदप्रकाश यांनी घेतली. हा तरुण उमरग्याला जाऊन बन्शीलाल यांची वाट पाहत बसला. दुपार टळली. सायंकाळ झाली. सभेसाठी आलेला जनसमुदाय वाट पाहू लागला. रात्रीचा अंधार पडला सभेसाठी आलेले अनेक लोक हळूहळू आपल्या गावी जाऊ लागले. उमरग्यात वाट पाहत बसलेला वेदप्रकाश निराश झाला. संपर्काची साधने नसलेल्या काळात. वाट पाहून पाहून तो परत गुंजोटीला फिरला.

इकडे मात्र ईत्तेहादूल मजलिसे मुसलमीन, निजामसमर्थक रजाकार आणि निजामाचे पोलिस यांची वाकडी नजर वेदप्रकाश यांच्यावर होतीच. सभेसाठी जमलेले लोक हळूहळू पांगायला लागले आणि दुसरीकडे घातपातासाठी क्रूरकर्म्यांचा जमाव सध्याच्या वेदप्रकाश आर्य चौक(गुंजोटी)परिसरात जमू लागला.

वेदप्रकाश गावात आले 'वैदिक धर्म की जय', 'आर्य समाज की जय'

अशा घोषणा कानी येऊ लागल्या. निराश झालेल्या वेदप्रकाश यांना या घोषणा ऐकून खूप आनंद झाला. कारण आपला संपर्क न झाल्याने बन्शीलालजी सभास्थानी पोचले, असे त्यांना वाटले आणि ते ज्या गल्लीतून आवाज येत आहे, तिकडे ते हर्षभरित होऊन निघाले. पण हा अभिमन्यू ज्या चक्रव्यूहात अडकणार होता, त्याची कल्पना ना त्यांना होती ना त्यांच्या सहकार्यांना...! रझाकार आणि त्याच्या समर्थकांनी बरोबर डाव साधला..निःशस्त्र आणि एकट्या या धाडसी तरुणाच्या पाठीवर तलवारीने आणि इतर शस्त्रांनी वार केले. प्रचंड ताकदीचा हा तरुण असंख्य क्रूरकर्म्यांच्या समुहापुढे एकटा पडला. पण त्यांच्या प्राणार्पणाने गुंजोटीतून मुक्तिसंग्रामाचा वनवा पेटला. जो पुढे रझाकारासहित मिर उस्मान अलिखान(हैद्राबादचा निजाम)यालाही भस्मसात केल्याशिवाय थांबला नाही.

धन्य ती गुंजोटीची कूस आणि धन्य ते वेदप्रकाशसारखे अनेक वीर! त्यांचा व आर्य समाजाच्या विचाराचा वारसा गुंजोटीमधे व परिसरात चालवणारे स्मारक आणि लोक आहेत. प्रणाम त्यांच्या कार्याला..!!

-मु.पो.नाईचाकूर ता. उमरगा
जि.धाराशिव
मो.९६०४२११८९७

आरोग्य संपदा

वसंत ऋतुतील आजार व उपाय

- वैद्य विज्ञानमुनी

संपूर्ण विश्वामध्ये भारत हा एक असा देश आहे की या देशाची प्राकृतिक रचना दुसऱ्या कोणत्याही देशाशी जुळत नाही. सूर्य, चंद्र,नक्षत्र, ताऱ्यांचा जो नियमितपणा आहे, त्यात दक्षिणायन-उत्तरायण, तीन मोसम-उन्हाळा, पावसाळा, हिवाळा आणि एका वर्षामध्ये मेष, वृषभ इत्यादी सहा ऋतू हे फक्त भारतातच होतात. दुसऱ्या देशात होत नाहीत म्हणूनच भारत भाग्यशाली देश आहे. पृथ्वीच्या दुसऱ्या भागावर कुठे सहा महिने प्रकाश असतो, तर कुठे सहा महिने अंधार असतो. हा प्रकार दोन्ही ध्रुवांवर असतो. भारतामध्ये हे ऋतू दो-दोन महिन्यांचे असतात. त्यातील वसंत ऋतू चैत्र-वैशाख (एप्रिल-मे) या दोन महिन्यात असतो.

शिशिर ऋतुमध्ये संचित झालेला कफ वसंत ऋतुत प्रखर होतो. कारण तो सूर्य किरणांनी तो प्रकोपित झालेला

असतो. या वेळी जठराग्नी मंद होतो. कफजन्य रोग होतात. न्युमोनिया, दमा,सर्दी-पडसे,खोकला इ.रोग होतात.
चिकित्साः-आपल्या शारीरिक त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) पैकी या वसंतऋतू मध्ये कफ हा वमनाने कमी करता येतो. पंचकर्म विधी, जल कुंजर, योग्य आहार, व्यायाम, औषधी इत्यादी क्रियांद्वारे कफाचे शमन करता येते. वैद्याचार्य म्हणतात-

व्यायाम कफनाशाय वातनाशाय मर्दनम्।
स्नानं च पित्तनाशाय मात्रया तान् समाचरेत्।।

व्यायामाने कफाचा नाश होतो, वाताचा मसाजने(मर्दनाने), पित्ताचा थंड पाण्याने स्नान केल्याने नाश होतो. पंचकर्म विधी उपयोग वैद्याकडूनच करून घ्यावा. या ऋतुमध्ये दिवसा झोपू नये. बागेत फिरणे, थंड वारा सेवन करणे श्रेयस्कर आहे. तेलाने सर्वांगाला मालीश करणे हितावह आहे. शरीरावर घामोळ्या आल्या असल्यास चंदन व थोडी हळद टाकून घासून लेप लावावा. या ऋतुमध्ये मधुर, आम्ल, स्निग्ध आणि जड अन्न खाऊ नयेत. म्हणजेच गुळ, साखर, गोड पदार्थ, चहा, कॉफी, दही, चिंच, तळलेले पदार्थ, आईस्क्रिम, पुरणपोळी, मैदा, बेसन, रवा इत्यादीचे सेवन टाळावे. या काळात भाकर, कण्या, सुक्की चपाती, घुगऱ्या, मुगाची टरफलाची दाळ असा आहार घ्यावा. दाळीवर लिंबू घ्यावा. लिंबू नसल्यास तूप एक दोन चमचे घ्यावे. पाणी पिण्यासाठी वाळ्याचा उपयोग करावा. या ऋतुमध्ये जागरण करणे निषिद्ध आहे. प्रातर्भ्रमण हितकर आहे.

औषधी :- बाळ हिरडा चूर्ण एक मासा व त्या दुप्पट मध सकाळ-संध्याकाळ घ्यावे. म्हणजे सर्दी, पडसे व कफ कमी तसेच द्राक्षासव, लोहासव, अश्वगंधारिष्ट, दशमूलादी काढा, लोह भस्म, कफ कुठार, कफकर्तरी, कफकेतू व लिंबाच्या फुलाच्या पाकळ्या (पाडव्या दिवशी खातात) यांचे सेवन करावे. कारण हेच की कफाचे रोग कमी होऊन जातात.

यज्ञचिकित्साः-यज्ञामुळे रोगांचा संहार होतो. या ऋतुमध्ये पुढील औषधाने, सामग्रीने,तुपाने व समिधांनी यज्ञ करावा.

समिधा :- अंबा, पळस, उंबर, पिंपळ, वड, खैर, पिंपरी इत्यादी.

सामग्री :- छरीला (धोंड फुल), तालीस पत्र, पळस पापडी, लाजवंती, खडीसाखर, कापूर, देवदार, गुळवेल, अगर तगर, केशर, इन्द्रजव, गुळ, कस्तुरी, तिन्ही चंदन, (रक्त, पित, पांढरा) जावित्री, जायफळ, मोहरी,

दालचिनी, डंबरे, शंख पुष्पी, वाळा, चिरायता, गोखरु, गुळ, तूप, ऋतुफळे भात वगैरे. चरकाचार्य म्हणतात – 'या ऋतुमध्ये कडू तिखट, कषाय(तुरट) हे रस कफास मारतात.' म्हणून या रसाने युक्त आहार घ्यावा.

१) कडूसाठीः–कारले, कडूलिंबाची फुले
२) तिखटसाठी :– काळे मिरे, लाल मिर्ची, सुंठ, ओवा, पिंपळी
३) तुरटसाठीः–हिरडा, आवळा, बेहडा

– श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रम,
परळी–वै. मो.९६९९७२०१०९

वार्ता विशेष

श्री देशपांडे यांच्या मराठी 'भगवद्गीता' ग्रंथाचे प्रकाशन

सभेचे माजी मंत्री श्री माधवराव जी देशपांडे यांनी मराठीत अनुवाद केलेल्या 'श्रीमद्भगवद्गीता' या ग्रंथाचे प्रकाशन दि.८ जानेवारी रोजी पार पडले. पिंपरी आर्य समाजात झालेल्या सोहळ्यात ख्यातनाम विद्वान आचार्य डॉ.श्री वागीश जी शर्मा यांच्या हस्ते पार पडले. अध्यक्षस्थानी प्रा.सोनेराव आचार्य हे होते, तर प्रमुख पाहुणे म्हणून श्री शरदचंद्रजी बोर्डे, सभेचे मंत्री श्री राजेंद्र दिवे, उपप्रधान श्री दयाराम बसैये उपस्थित होते.

यावेळी आचार्य श्री वागीश जी यांचे 'गीतेतील कर्मयोग व दुःखमुक्ती– विज्ञान' या विषयावर मौलिक व्याख्यान पार पडले. ते म्हणाले– गीतेचे तत्त्वज्ञान हे मानवी जीवनाच्या सर्वांगीण विकासासाठी अत्यंत लाभकारक आहे.

नैराश्यवादी दृष्टिकोन, ताण– तणाव, विविध प्रकारची दुःखे इत्यादींना नाहीसे करण्यासाठी व आनंदाने जगण्यासाठी हा ग्रंथ दिशादर्शक आहे. अध्यक्षीय समारोपात प्रा.सोनेराव आचार्य यांनी गीतेचे अमृतासमान विचार हे प्रत्येक मानवी मनाला नवी उभारी देण्याचे काम करतात. यावेळी सर्वश्री दयाराम बसैये, राजेंद्र दिवे, डॉ. नयनकुमार आचार्य, कु. मिष्टी देशपांडे यांनी विचार मांडले

याच प्रसंगी श्री माधव देशपांडे व सौ. नलिनी देशपांडे यांच्या विवाहाचा सुवर्ण महोत्सव साजरा करण्यात आला. यानिमित्त आयोजित विशेष यज्ञाचे पौरोहित्य पंडित श्री विवेक आर्य यांनी केले. यावेळी आर्य समाजाचे संरक्षक श्री मुरलीधरजी सुंदरानी, प्रधान सुरेंद्र कर्मचंदानी, मंत्री हरेश तिलोकचंदानी यांच्यासह इतर पदाधिकारी व सदस्य उपस्थित होते. यावेळी सौ.नलिनी देशपांडे व श्री माधवराव देशपांडे यांनीही विचार मांडले. सूत्रसंचालन सौ पल्लवी आमटे यांनी केले, तर आभार श्री पराग देशपांडे यांनी मानले.

वेदपाठक यांच्या 'मराठी अग्निहोत्र' ग्रंथाचे प्रकाशन

वैदिक साहित्याचे अभ्यासक श्री सुभाषजी वेदपाठक यांनी संकलित व संपादित केलेल्या 'दैनिक अग्निहोत्र' या मराठी ग्रंथाचे प्रकाशन दि.१ जानेवारी रोजी छ. संभाजीनगर येथे एका जाहीर

कार्यक्रमात झाले. आर्य पर्व पद्धती व व इतर बृहद्यज्ञ विधींचे विवेचन असलेल्या या विस्तृत ग्रंथाचे प्रकाशन माजी केंद्रीय मंत्री श्री जयसिंगराव गायकवाड पाटील यांनी केले. यावेळी व्यासपीठावर प्रमुख पाहुणे प्रा.डॉ.अखिलेश शर्मा, प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य, तसेच ॲड.शिवाजीराव शिंदे, वैद्य विज्ञानमुनिजी,श्री हळनोर यांची उपस्थिती होती. उद्घाटक श्री गायकवाड पाटील यावेळी म्हणाले-महर्षी दयानंद हे खरे समाजसुधारक होते. समाजात वाढत चाललेल्या अंधश्रद्धा वाईट रूढी परंपरा यांना आर्य समाजाचे नाहीसे केले व आम्हास विज्ञानवादी दृष्टिकोन दिला.

यावेळी प्रा. शर्मा व प्रा.आचार्य यांनीही विचार मांडले. परिचय डॉ.सुजाता करजगांवकर यांनी करून दिला, तर सूत्रसंचालन डॉ. लक्ष्मण माने (आर्य) यांनी केले. सकाळी श्री वेदपाठक यांच्या नव्या वास्तूचा गृहप्रवेश समारंभ पार पडला. तसेच त्यांच्या यशस्वी जीवनाचा अमृत महोत्सव देखील झाला.

शोक वार्ता

रामकृष्णजी लाहोटी यांचे निधन

परळी आर्य समाजाचे माजी मंत्री व अभ्यासू आर्य व्यक्तिमत्त्व श्री रामकृष्णजी नंदलालजी लाहोटी यांचे दि.२० जाने.२०२३ रोजी हृदयविकाराने दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ७२ वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या मागे पत्नी श्रीमती राजकुमारी, पुत्र महेश, कन्या सौ.मनीषा तोष्णीवाल व नातू-नाती, भाऊ-बहिणी असा परिवार आहे. त्यांनी शहर काँग्रेसचे सरचिटणीस, व्यापारी महासंघाचे अध्यक्ष व इतर पदे भूषविली. दिवंगत श्री लाहोटी यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. स्थानिक आर्य पंडितांनी वैदिक मंत्रोद्घोषात हा विधी पार पाडला. यावेळी सोलापुरचे आर्य कार्यकर्ते श्री बालाप्रसादजी सोनी, माजी राज्यमंत्री श्री पंडितरावजी दौंड यांच्यासह व्यापारी, उद्योग व राजकीय क्षेत्रातील मान्यवर लोक उपस्थित होते. तिसऱ्या दिवशी लाहोटी कुटुंबात पं.वीरेंद्र शास्त्री यांच्या पौरोहित्याखाली शांतियज्ञ करण्यात आला.

आई व कन्येचे अपघाती निधन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे मंत्री श्री राजेंद्रजी दिवे यांच्या ज्येष्ठ भगिनी सौ.कांताबाई वाल्मिकराव जाधव(वय ८०- रा.कार्ला ता.औसा जि.लातूर) व भाच्ची सौ.रंजना ज्ञानेश्वर सराफ (वय ४५-रा.पुणे) या माय-लेकींचा दि.३० जानेवारी २०२३ रोजी पहाटे भीषण अपघातात दुर्दैवी मृत्यू झाला. सराफ कुटुंबीय गोकर्ण महाबळेश्वरहून पुण्याकडे 'इन्होव्हा' कारने परतत असतांना पुणे-बेंगलोर राष्ट्रीय महामार्गावर खंबाटकी बोगद्याच्या अलीकडे हा भयंकर अपघात घडला. यात माता व कन्येचा जागीच मृत्यू झाला, तर इतर कांहीजण जखमी झाले. या आकस्मिक दुर्घटनेमुळे जाधव व सराफ कुटुंबावर दुःखाचा डोंगर कोसळला आहे. या घटनेचे वृत्त कळताच सभामंत्री श्री राजेंद्र दिवे पुण्यास पोहोचले व सर्वांच्या वतीने सांत्वना दिली व श्रद्धांजली अर्पण केली.

दिवंगत आत्म्यांना राज्यातील सर्व समाजाच्या वतीने भावपूर्ण श्रद्धांजली..!

Reg.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/108/RNP/Beed/2021-2023

सेवा में,
श्री. ______________________

____

____

____

प्रेषक –
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली-वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१५१५ (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया।

भावपूर्ण श्रद्धाञ्जलि ! **।। ओ३म् ।।** **जीवेत् शरदः शतम्!**

औराद शहाजानी(जि.लातूर) स्थित आर्य समाज के आधारस्तम्भ,
शारदोपासक शिक्षण संस्था के नवनिर्माण में योगदान देनेवाले,
सामाजिक, शैक्षिक कार्यकर्त्ता एवं कर्तव्यदक्ष अध्यापक
पू.पिताजी स्व.श्री.गणपतरावजी विठोबा निरमनाळे गुरुजी
की **पावन स्मृति में** तथा आदर्श शिक्षिका एवं सामाजिक कार्यकर्त्री
पू.माताजी श्रीमती सीताताई गणपतरावजी निरमनाळे
के **गौरव में** समस्त निरमनाळे(जाधव) परिवार की ओर से
'**वैदिक गर्जना मासिक**' का रंगीन मुखपृष्ठ भेंट